पाठ्य-पुस्तक चयन के सिद्धान्त (Principles or Criteria for the Selection of Commerce Text-Book)—विद्यालय स्तरीय शिक्षा में पाठ्य-पुस्तकें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए पुस्तकों का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए। आजकल माध्यमिक स्तर तक लगभग सभी पुस्तकें एन० सी० ई० आर० टी० (NCERT) या राज्य शिक्षा विभाग (State Education Deptt.) छापता है। अतः चयन की आवश्यकता नहीं रहती, परन्तु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विशेष रूप से ऐच्छिक विषयों की पुस्तकों का चयन विषय अध्यापक को करना होता है। वाणिज्य की पाठ्य-पुस्तक चयन का उत्तरदायित्व वाणिज्य अध्यापक पर आ जाता है। वाणिज्य अध्यापक को वाणिज्य पाठ्य-पुस्तक के दोनों पक्षों—आन्तरिक एवं बाह्य पक्ष को ध्यान देना आवश्यक होगा। पाठ्य-पुस्तक चयन के लिए निम्न गुणों एवं सिद्धान्तों पर ध्यान देना आवश्यक होगा—

(1) **आन्तरिक पक्ष**—इसके अन्तर्गत पाठ्य-पुस्तक की विषय-वस्तु, भाव, भाषा-शैली, व्यवस्था एवं संगठन, अभ्यास, चित्र आदि पर ध्यान दिया जाता है।

(i) **विषय-सामग्री (Subject-matter)**—वाणिज्य पाठ्य-पुस्तक की सामग्री व्यापक होनी चाहिए, जिससे पाठ रुचिकर एवं अर्थपूर्ण बन सकें। वाणिज्य की पाठ्य-पुस्तक में दिए गए तथ्य सत्य, प्रमाणित होनें के साथ-साथ अधुनातन (Latest) होने चाहियें।

(क) विषय-सामग्री व्यावहारिक होनी चाहिए।

(ख) उपयुक्त शब्दावली एवं पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

(ग) विषय-वस्तु वाणिज्य के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होनी चाहिए।

(घ) विषय-सामग्री वाणिज्य के उद्देश्य के अनुरूप होनी चाहिए।

(ङ) विषय-सामग्री संतुलित होनी चाहिए।

(ii) **भाषा (Language)**—वाणिज्य पाठ्य-पुस्तक की भाषा, सरल, स्पष्ट और छात्रों की आयु, मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।

(iii) **भाषा-शैली (Language Style)**—पाठ्य-पुस्तक में प्रयुक्त भाषा शैली सरल, स्पष्ट होने के साथ-साथ भावानुकूल होनी चाहिए। पुस्तक के प्रत्येक पाठ की शैली में मौलिकता होनी चाहिए। पाठ में लेखक के मूल विचारों की अभिव्यक्ति ऐसी भाषा में होनी चाहिए, जो छात्रों को ग्राह्य हो।

Scanned by TapScanner

(iv) व्यवस्था एवं संगठन (Order and Planning)—पाठ्य-पुस्तक की इकाइयों को नियोजित, क्रमबद्ध एवं तार्किक होना चाहिए (Systematic and Logical)। साथ ही सम्पूर्ण विषय-वस्तु पर उद्देश्यों के अनुसार बल दिया जाना चाहिए। पठन सामग्री का संगठन लचीला होना चाहिए, जिससे अध्यापक आवश्यकतानुसार परिवर्तन ला सके। साथ ही ऐसी व्यवस्था भी हो कि अध्यापक पाठ को रुचिकर बनाने के लिए नई शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग कर सकें।

(v) व्याख्या तथा अभ्यास (Explanation and Exercises)—पाठ्य- पुस्तक में दी गई विषय-वस्तु एवं उदाहरणों की व्याख्या स्पष्ट होनी चाहिए। पाठ्य-पुस्तक में दिए गए चित्रों की भी व्याख्या की जाए या उन्हें पाठ्य-वस्तु के अन्दर ऐसे प्रयोग किये जायें कि वे उसका अभिन्न अंग बन जायें। अभ्यास कार्य पर्याप्त हो और साथ ही उसमें विविधता हो, जिससे साधारण एवं प्रतिभाशाली छात्रों को कार्य मिल जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अभ्यास कार्य में सरलता से जटिलता का सिद्धान्त अपनाना चाहिए। प्रश्नों के प्रकार में भी भिन्नता होनी चाहिए अर्थात प्रश्न निबन्धात्मक, लघु उत्तरीय और वस्तुनिष्ठ होने चाहियें। ये प्रश्न पाठ्य-पुस्तक की उपयोगिता बढ़ा देंगे।

(vi) चित्र तथा रेखाचित्र (Pictures and Sketches)—चित्र, रेखाचित्रों से पाठ्य-पुस्तक को आकर्षक बनाया जाता है। उच्च-स्तर पर रेखाचित्र, चित्र आदि की संख्या और आकार को घटाया जा सकता है। परन्तु चित्र, रेखाचित्र का उद्देश्य केवल सजावट नहीं होना चाहिए। वाणिज्य की पुस्तक में मानचित्र, चित्र और बहीखाता सम्बन्धी चार्टों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जाए। चित्र, रेखाचित्र उद्देश्यपूर्ण होने चाहियें और साथ ही उनका उद्देश्य छात्रों के ज्ञान में वृद्धि करना होना चाहिए। वाणिज्य पुस्तक में दिए गए आँकड़े, तथ्य और रेखाचित्रों का वर्णन स्पष्ट होना चाहिए।

(vii) संदर्भ सूची (Reference List)—उच्च-स्तर की पाठ्य-पुस्तकों और विशेषकर वाणिज्य की पाठ्य-पुस्तक में पाठों के अन्त में पाठ्य-सामग्री, चित्र, रेखाचित्र आदि से सम्बन्धित संदर्भ सूची देना आवश्यक है, क्योंकि इसकी सहायता से छात्र किसी इकाई विशेष के बारे में विशेष अध्ययन कर सकते हैं। इससे अध्यापकों को पुस्तकालय के लिए पुस्तकों के चयन में सहायता मिल जाती है।

(viii) शब्दावली सूची (Vocabulary List)—वाणिज्य की पुस्तक में बहुत-से पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसलिए उपयुक्त होगा कि पाठों के अन्त में शब्दावली सूची दे दी जाए। इससे छात्र नए शब्द सीखेंगे और उनका अर्थ भी समझ लेंगे।

Scanned by TapScanner

(ix) कार्य-पुस्तिका (Work-Book)—वाणिज्य पुस्तकों में बहीखाता जैसे विषय के लिए कार्य-पुस्तिका का होना आवश्यक है। इससे छात्रों को बहीखाता लिखने का पर्याप्त अवसर मिल सकेगा।

(2) बाह्य पक्ष

(i) वाणिज्य पाठ्य-पुस्तक का आकार एवं वजन (Size and Weight of Commerce Books)—पाठ्य-पुस्तक का आकार और वजन उचित होना चाहिए। उच्च-स्तर की पाठ्य-पुस्तकों का आकार प्रमाणित (Standard) होना चाहिए, जिससे पाठ्य-पुस्तक उठाने में छात्रों को कोई कठिनाई अनुभव न हो। बहीखाते की पुस्तक की चौड़ाई अधिक होनी चाहिए।

(ii) कागज़ और मुद्रण (Paper and Printing)—पाठ्य-पुस्तक का कागज़ सफेद, मोटा, चिकना और मजबूत होना चाहिए, ऐसी स्थिति में छपाई साफ आएगी और कागज़ के दूसरी ओर छपाई का प्रभाव नहीं पड़ेगा।

उच्च कक्षाओं में छपाई के लिए 12 पाइंट का कागज प्रयोग किया जाना चाहिए। पाठ्य-पुस्तकों में प्रयुक्त टाइप स्टाइल कलात्मक नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इससे पढ़ने में कठिनाई होती है।

पाठ्य-पुस्तक की छपाई के संदर्भ में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—

— पृष्ठ के ऊपरी और निचले भाग में 2 सेमी० और 1·5 सेमी० स्थान खाली होना चाहिए।
— पृष्ठ के दाईं और बाईं ओर 2 सेमी० और 1 सेमी० स्थान खाली छोड़ना चाहिए।
— दो पंक्तियों के बीच 0·5 सेमी० अन्तर रखना चाहिए।
— प्रत्येक पूर्ण पंक्ति की लम्बाई 11 सेमी० से अधिक नहीं होनी चाहिए।
— पुस्तक की छपाई साफ होनी चाहिए और स्याही समान रूप से फैली होनी चाहिए।

(iii) लेखन एवं सम्पादन (Writing and Editing)—वाणिज्य एक व्यावसायिक विषय है। इसके उप-विषय एक ही व्यक्ति नहीं लिख सकता, इसलिए अच्छा होगा कि लेखन कार्य विभिन्न ऐसे व्यक्तियों को दिया जाए, जो योग्य एवं अनुभवी हों, उन्हें लेखन कार्य में रुचि होने के साथ-साथ लेखन शैलियों का भी ज्ञान हो।

विभिन्न लेखकों के कारण वाणिज्य पुस्तक की भाषा में एकरूपता नहीं आएगी। इसीलिए पाठ्य-पुस्तक की भाषा-शैली और विषय-सामग्री के संगठन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी। अतः पुस्तक के सम्पादन का कार्य एक अनुभवी एवं भाषाविद को दिया जाना चाहिए।

Scanned by TapScanner

(iv) पुस्तक का मुख्य पृष्ठ (Title Page of the Book)—पाठ्य-पुस्तक का मुख्य पृष्ठ आकर्षक होना चाहिए। अच्छा हो कि मुख्य पृष्ठ पर कोई ऐसा चित्र हो जो पाठ्य की विषय-वस्तु (प्रकृति) को परिलक्षित करता हो।

(v) पुस्तक का मूल्य एवं उपलब्धता (Price and Availability of the Book)—पुस्तक का मूल्य ऐसा रखा जाए जोकि अधिकांश छात्र मूल्य देकर पाठ्य-पुस्तक खरीद सकें। साथ ही पाठ्य-पुस्तक सरलतापूर्वक बाजार में उपलब्ध हो।

विभिन्न राज्यों में वाणिज्य का पाठ्यक्रम अलग होने के कारण कोई एक पाठ्य-पुस्तक निश्चित करना कठिन है परन्तु उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर अपने विद्यालय के लिए वाणिज्य पाठ्य-पुस्तक का चयन किया जा सकता है।

Scanned by TapScanner